वर्तमान हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में यान्त्रिक वाद्यों की भूमिका

डॉ. कीर्ति गर्ग
संगीत विभाग, हि.प्र.विश्वविद्यालय, शिमला

गीत, वाद्य तथा नृत्य इन तीनों कलाओं का सामूहिक नाम संगीत है अर्थात् संगीत के अन्तर्गत् ये तीन कलाएं मानी जाती हैं। इन तीनों का सामूहिक प्रयोग ही संगीत को जन्म देता है, फिर भी ये तीनों कलाएँ स्वतन्त्र मानी जाती हैं। इन तीनों का अलग–अलग प्रयोजन एवं महत्व है।

इन तीनों कलाओं में नाद तथा गति दो ऐसे मुख्य आधार तत्व हैं जो संगीत में क्रमशः स्वर तथा लय को जन्म देते हैं। दूसरे शब्दों में संगीत रूपी भवन स्वर तथा लय इन दो नीवों पर खड़ा है। इन्हीं दो मूल आधारों का अर्थात् संगीतात्मक स्वर तथा उसकी लय का बोध करवाने वाले उपकरण का नाम वाद्य है। दूसरे शब्दों में ध्वनि उच्चारण करने वाला उपकरण 'वाद्य' कहलाता है। इस दृष्टि से ध्वनि उत्पन्न करने वाला मनुष्य का कण्ठ भी एक प्रकार का वाद्य ही हुआ।

अतः हम वाद्य उपकरण दो प्रकार के मान सकते हैंः–

1. ईश्वर निर्मित
2. मनुष्य निर्मित

मनुष्य अथवा किसी जीव का कण्ठ ईश्वर निर्मित वाद्य कहा जा सकता है। क्योंकि इसमें कण्ठ के विशेष अंगों की सहायता से स्वरोत्पत्ति की जाती है। जबकि अन्य सभी भौतिक वाद्य मनुष्य निर्मित माने जाते हैं।

वाद्यों का सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य है शास्त्रीय संगीत की विवेचना में उनका सहयोग। प्राचीनकाल से चली आ रही शास्त्रीय संगीत की परम्परा वाद्यों के द्वारा ही आज सुरक्षित रही है। यदि ऐसा कहा जाए कि आज अगर वाद्य न होते तो शास्त्रीय संगीत की परम्परा भी अस्तित्व हीन हो चुकी होती ऐसा कहना गलत न होगा क्योंकि संगीत में स्वरोत्पत्ति स्वर–स्थान का स्थिरीकरण, स्वरान्तरालों का नाप–तोल, लय–ताल बनाने तथा विकसित करने, विभिन्न लयकारियों का प्रदर्शन करने आदि

जैसे कार्य वाद्यों के बिना सम्भव नहीं हो सकते। महर्षि भरत ने भी श्रुतियों के प्रत्यक्षीकरण के लिए एक समान बनी दो वीणाओं का प्रयोग किया।

शास्त्रीय संगीत में ध्रुपद, धमार, ख्याल, ठुमरी, टप्पा आदि गायन के साथ विभिन्न वाद्यों का सुन्दर प्रयोग ही इन शैलियों का अस्तित्व बनाए हुए हैं। वादन कला में सितार, सरोद, शहनाई, बाँसुरी, संतूर, वायलिन, वीणा इत्यादि का एकल–वादन जो आज अत्यधिक लोकप्रिय हो रहा है, वह तो पूरे का पूरा ही वाद्यों पर आधारित है। तबले अथवा मृदंग का प्रयोग शास्त्रीय संगीत की प्रत्येक शैली के साथ ताल संगति के लिए आवश्यक रूप से किया जाता है। ताल वाद्यों के बिना तो कोई भी संगीत शैली मधुर तथा आकर्षक नहीं लग सकती।

हमारे संगीत में निरन्तर परिवर्तन होता रहा है और परिवर्तन के साथ–साथ संगीत का विकास भी होता गया है। आज अनेक परिवर्तन हमारे संगीत में देखने को मिल रहे हैं, यही परिवर्तन संगीत वाद्यों में भी देखने को मिल रहा है। हमारे शास्त्रीय संगीत में हाथों से बजाए जाने वाले वाद्यों का महत्वपूर्ण स्थान है क्योंकि इन वाद्यों का अपना एक अलग स्थान है। फिर चाहे वह सितार, सरोद, शहनाई, बाँसुरी, तबला, मृदंग ही क्यों न हो। ये सभी वाद्य जब शास्त्रीय संगीत के साथ बजाए जाते हैं तो एक अलग ही प्रकार के रस का संचार होता है। लेकिन आज जिस प्रकार हमारे चारों और वस्तुओं में परिवर्तन होते जा रहे हैं उसी प्रकार हमारे शास्त्रीय संगीत में प्रयोग हाने वाले वाद्य भी परिवर्तित होते जा रहे हैं। आज हमारा सम्पूर्ण जीवन यान्त्रिक वस्तुओं से भर गया है। हमारे दैनिक जीवन का कोई भी पहलू इससे अछूता नही है। यहाँ तक की हमारे शास्त्रीय संगीत में भी यान्त्रिकी ने अपनी जगह बना ली है। आज शास्त्रीय संगीत में यान्त्रिक वाद्यों का बहुत अधिक समावेश हो गया है। वह शास्त्रीय गायन हो या वादन, सभी में यान्त्रिक वाद्यों का ज़ोर–शोर से प्रयोग होने लगा है। यान्त्रिक वाद्यों के अन्तर्गत् आज बहुत से वाद्य प्रचार में आ गए हैं जैसे – तानपूरा, तबला, बाँसुरी, सिंथेसाइज़र इत्यादि। सिंथेसाइज़र तो एक ऐसा यान्त्रिक वाद्य है कि जिसमें हमारे हाथ से बजाए जाने वाले लगभग सभी वाद्य बज सकते हैं।

आज हमारे विद्यालयों, महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों के संगीत शिक्षण में इन वाद्यों का पूर्ण रूप से समावेश हो चुका है। आज शिक्षण संस्थाओं में यान्त्रिक वाद्यों जैसे – तानपूरा, तबला आदि का भरपूर प्रयोग किया जाता है। गायन–वादन

के साथ स्वर और ताल के लिए इन वाद्यों का पूर्ण रूप से प्रयोग होता है। विद्यार्थियों के लिए तो ये यान्त्रिक वाद्य बहुत सहायक सिद्ध हो रहे हैं। विद्यार्थी इन वाद्यों का प्रयोग कहीं भी, किसी भी समय कर सकते हैं। यदि शिक्षक कक्षा में नही है तो विद्यार्थी इन वाद्यों के द्वारा अपने शास्त्रीय संगीत का अभ्यास इन वाद्यों के सहयोग से कर सकते हैं। जैसे विद्यार्थी अपने स्वर के अनुसार यान्त्रिक तानपूरे को स्वर पर व्यवस्थित करके उसके स्वराधार पर गायन कर सकता है। इसी प्रकार यान्त्रिक तबले में भी हर तरह के ताल का समावेश किया गया है इसी लिए इसे 'तालमाला' कहकर भी पुकारा जाता है, जो विद्यार्थियों तथा अन्य गायकों–वादकों के शास्त्रीय संगीत के साथ उपयुक्त ताल का वादन कर उन्हें ताल संगत में सहायक सिद्ध होता है।

इसी प्रकार अलग–अलग यान्त्रिक वाद्यों का प्रयोग बड़े–बड़े कार्यक्रमों में संगत के लिए तथा शास्त्रीय गायन के साथ भिन्न–भिन्न प्रकार के वाद्यों की संगत के रूप में किया जाने लगा है। कई स्थानों पर संगत के लिए वाद्यवृन्द के लिए भी एक ही यान्त्रिक वाद्य का प्रयोग होने लगा है क्योंकि इस एक वाद्य से अनेक वाद्यों की ध्वनि उत्पन्न की जा सकती है। इन वाद्यों के प्रयोग का लाभ तो शास्त्रीय संगीत में हुआ ही है लेकिन इनका सबसे अधिक लाभ विद्यार्थियों को हुआ है। क्योंकि वे इन वाद्यों के साथ अपने शास्त्रीय संगीत का अभ्यास आसानी से कर लेते हैं। उन्हें वाद्य मिलाने की आवश्यकता नही पड़ती जिससे उनका समय बचता है और वे आसानी से यान्त्रिक वाद्यों का प्रयोग करते हैं और इनका लाभ उठाते हैं। यहाँ तक की हमारे कई कलाकार भी इन वाद्यों का प्रयोग अपने शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रमों में करने लगे हैं क्योंकि दूसरे वाद्य अधिक बड़े तथा नाजुक होने के कारण इधर–उधर ले जाने में कठिनाई उत्पन्न करते हैं जबकि यान्त्रिक वाद्य लाने–ले जाने में सुविधाजनक होते हैं और इन्हें मिलाने के लिए समय भी नष्ट नही होता है।

ये वाद्य शास्त्रीय संगीत में अपना अत्यधिक स्थान बना चुके हैं। इसका कारण ये है कि ये यान्त्रिक वाद्य रखने में, इधर–उधर ले जाने में और सबसे अधिक आसानी से प्रयोग होने के कारण हमारे संगीत में अपना प्रमुख स्थान बनाते जा रहे हैं। यद्यपि ये यान्त्रिक वाद्य रख–रखाव व लाने–ले जाने में सुविधाजनक होते हैं तथापि ये कहना तर्कसंगत होगा कि ये वाद्य हमारे पारम्परिक वाद्यों का स्थान नही ले सकते।